سُورَةُ الْقَارِعَةِ مَكِّيَّةٌ

सूरह अल-क़ारिया मक्का में उतारी गई (नाज़िल हुई)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

आरंभ (शुरू) अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयावान, निरंतर (असीम) दयाशील है।

اَلْقَارِعَةُ ۙ (1) مَا الْقَارِعَةُ ۚ (2)

खड़खड़ाने वाली ! (भीषण आघात) 1 क्या है ? (वह) खड़खड़ाने वाली ! (भीषण आघात) 2

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْقَارِعَةُ ؕ (3)

और तुम्हें क्या पता, क्या है ? खड़खड़ाने वाली ! (भीषण आघात)

يَوْمَ يَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْثِ ۙ (4)

जिस दिन लोग बिखरे हुए पतंगे जैसे हो जाएंगे।

وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ ؕ (5)

और पर्वत (पहाड़) धुनी हुई रंगीन ऊन के समान (जैसे) हो जाएंगे।

فَاَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ ۙ (6)

तो बहरहाल (वह) जिसके पलड़े (नेकी / सत्कर्मों के तौल) भारी होंगे।

فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ؕ (7)

तो वह मनभाते (आनंदमय) जीवन में (होगा)।

وَاَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ ۙ (8)

और रहा वह जिसके पलड़े (नेकी / सत्कर्मों के तौल) हल्के होंगे।

فَاُمُّهٗ هَاوِيَةٌ ؕ (9)

तो उसकी माँ (अंततः वास्तविक ठिकाना) 'हाविया' (होगी)।

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا هِيَهْ (10)

और तुम्हें क्या पता, क्या है ? वह ! (हाविया)

نَارٌ حَامِيَةٌ ۢ (11)

दहकती हुई (अत्यंत तप्त) आग !